असामान्य मनोविज्ञान और विषय वस्तु (ABNORMAL PSY. & SUBJECT-MATTER)

मनुष्य स्वभाव से जिज्ञासु होता है। वह एक दूसरे के व्यवहारों को तुलनात्मक रूप से समझने का प्रयास किया। इससे क्रमिक रूप से ज्ञान का दायरा बढ़ता गया और मनोविज्ञान में भी एक नई शाखा "असामान्य मनोविज्ञान" का प्रादुर्भाव हुआ।

असामान्य मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक विशिष्ट शाखा है, जो व्यक्ति के असामान्य व्यवहारों और असामान्य मानसिक क्रियाओं के कारणों, लक्षणों एवं वर्गीकरण तथा रोकथाम के उपायों का अध्ययन करता है साथ-ही साथ उनकी वैज्ञानिक व्याख्या के लिये सिद्धान्तों का निर्माण करता है। कारसन, बुचर, मीनेक (2005) के शब्दों में :- "Abnormal Psychology is the branch or field of Psychology concerned with the study, assessment and prevention of normal behaviours."

इसी तरह एक बहुत ही संक्षिप्त एवं सुन्दर परिभाषा किश्कर (1985) ने दी है:-

"असामान्य मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक ऐसी शाखा है, जो व्यक्तित्व से संबन्धित अशांति तथा व्यवहार सम्बन्धित विकृतियों का अध्ययन करता है।"

असामान्य मनोविज्ञान की उपर्युक्त परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित बातें स्पष्ट हो जाती हैं :—

(1) असामान्य मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक विशेष शाखा है।

(ii) इसके तहत असामान्य व्यवहारों और मानसिक विकृतियों का अध्ययन किया जाता है।

(iii) असामान्य मनोविज्ञान में असामान्य व्यवहार के कारण, लक्षण, वर्गीकरण तक उपचार के उपायों के बारे में अध्ययन किया जाता है।

(iv) इस शाखा के अन्तर्गत असामान्य व्यवहारों की सैद्धान्तिक व्याख्या की जाती है

(v) असामान्य व्यवहारों के संदर्भ में सिद्धान्तों का भी निर्माण किया जाता है।

असामान्य मनोविज्ञान की विषय-वस्तु:-

असामान्य मनोविज्ञान में ~~अ~~ व्यक्तियों के असामान्य व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। अतः स्पष्ट है कि मनोविज्ञान की इस शाखा में असामान्य लोगों से संबद्ध समस्याओं का अध्ययन, वर्गीकरण एवं उपचार ही इसका विषय-वस्तु होगा। असामान्य मनोविज्ञान के अन्तर्गत निम्नलिखित सम्प्रत्ययों का अध्ययन किया जाता है:—

(1.) सामान्यता एवं असामान्यता के सम्प्रत्यय:-
असामान्य मनोविज्ञान के तहत ~~अ~~ सामान्यता तथा असामान्यता के सम्प्रत्ययों की व्याख्या की जाती है। सामान्यता एवं असामान्यता किसे कहते हैं, उनकी कौन-कौन सी कसौटियाँ है और मापदण्ड है, उसकी क्या विशेषताएँ है आदि सभी तथ्यों का अध्ययन किया जाता है। सामान्य एवं असामान्य व्यवहार के बीच के अन्तर आदि सारी बातों का अध्ययन किया जाता है।

(2) असामान्य व्यवहार के कारण :- असामान्य मनोविज्ञान की विषय-वस्तु के अन्तर्गत असामान्यता के कारणों का अध्ययन किया जाता है। मानव में असामान्य व्यवहार पनपने के पीछे मुख्यतः तीन कारणों या कारकों का हाथ होता है। ये कारक हैं :-

(क) जैविक कारक (Biological factors)

(ख) मनोवैज्ञानिक कारक (Psychological factors)

(ग) सामाजिक कारक (Social factors)

असामान्य व्यवहार के पीछे कौन से कारक कार्य कर रहे हैं। इसको पता लगाकर उपचार अथवा रोकथाम के उपाय को बताया जाता है।

(3) असामान्यता के विविध लक्षण :- असामान्य व्यवहारों के विविध लक्षणों का भी अध्ययन किया जाता है। ये लक्षण मूलतः शारीरिक तथा मानसिक होते हैं। असामान्य लोगों की संज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक (conative) विकृतियाँ पाई जाती हैं। इन क्रियाओं में उत्पन्न असामान्यता या विचित्र व्यवहारों का अध्ययन कर मानसिक रूप से अस्वस्थ्य व्यक्ति को अलग-अलग श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है।

(4) मानसिक विकृतियाँ :- असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत हम विविध तरह की मानसिक विकृतियों को वर्गीकृत कर अध्ययन किया जाता है। यथा, मनोस्नायु विकृति ~~स्नायुवि~~ मनोविकृति (Psychoneurosis & Psychosis) मनोदैहिक विकृति (Psychosomatic disorder) मानसिक दुर्बलता, मूड विकृति, नींद विकृति, समायोजन सम्बन्धित विकृति, भक्षण विकृति (Eating disorder

आवेग नियंत्रण विकृति, द्रव्यसेवन सम्बद्ध विकृति आदि का अध्ययन किया जाता है। इसके साथ ही साथ व्यक्तित्व विकृति अन्य मस्तिष्क विकृति का भी अध्ययन किया जाता है। American Psychological Association, DSM-IV आदि द्वारा मानसिक रोगों की विषद वर्गीकरण किया गया है। ये सभी असामान्य मनोविज्ञान के विषय-वस्तु के अन्तर्गत अध्ययन किये जाते हैं।

अचेतन मन के विविध पहलुओं का अध्ययन :- असामान्य मनोविज्ञान के अन्तर्गत मन के आकारात्मक पहलु एवं गत्यात्मक पहलुओं का अध्ययन किया जाता है जिससे अचेतन मन मे छिपे गुत्थियों एवं रहस्यों का पता लगाकर असामान्यता के कारणों के तह तक जाने का प्रयास किया जाता है। इसके अलावे स्वप्न, दैनिक जीवन की भूलें (मनोविकृतियों का भी अध्ययन किया जाता है।

इसी तरह असामान्य मनोविज्ञान के विषय वस्तु एवं अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत असामान्यता के कारण, वर्गीकरण के अलावे रोकथाम के विविध उपायों एवं असामान्यता के भिन्न-भिन्न सिद्धांतों, उपचार प्रविधियों का भी अध्ययन किया जाता है।

असामान्य मनोविज्ञान का मूल सिद्धान्त यह है कि जिस प्रकार कुछ नियमों का पालन कर व्यक्ति अपने शरीर को स्वस्थ्य रख सकता है, ठीक उसी प्रकार Mental-Hygiene को अपनाकर व्यक्ति मानसिक परेशानियों

के भँवरजाल से निकल सकता है। इसी संदर्भ में मनोविज्ञान की महत्ता को स्वीकारते हुए कार्ल मेनिंजर (K. Menninger) ने कहा है! –

"Every thoughtful Physician Knows that Psychological factors are as real and as effective as physical & chemichal factors.

इस प्रकार स्पष्ट तौर पर हम कह सकते हैं कि झाड़-फूंक, ओझा-डाईन एवं अन्य जीववादी एवं अंधविश्वासी विचारधाराओं से आगे निकलते हुए असामान्य मनोविज्ञान मानव की असामान्य व्यवहारों की वैज्ञानिक व्याख्या करने में सक्षम हो चुका है। इसका क्षेत्र एवं अध्ययन की विषय-वस्तु दिन प्रतिदिन विस्तृत होती जा रही है। मनोविज्ञान की अन्य शाखाओं की तरह असामान्य मनोविज्ञान भी मानव जीवन को खुशहाल एवं संतुलित बनाने में सहयोग प्रदान कर रहा है।

R K Singh
29.04.2020
सहायक प्राध्यापक
मनोविज्ञान विभाग
डी० के० कॉलेज
डुमराँव।